सामाजिक संरचना की विशेषता

सामाजिक इकाइयां जैसे कि समूह, संस्था, परिवार सामाजिक प्रतिमान आदि की क्रमबद्धता को सामाजिक संरचना कहते है। सामाजिक संरचना की विशेषता निम्नलिखित है:—

(1) सामाजिक संरचना अमूर्त होती है अमूर्त का अर्थात है कि जो मूर्त या साकार न हो निराकार अप्रत्यक्ष, देहरहित, निरवयव / सामाजिक संबंधों का आधार सामाजिक संस्थाएं, सामाजिक प्रतिमान तय करते है जो कि अमूर्त होते है।

(2) सामाजिक संरचना अनेक उपसंरचनाओं से मिलकर बनती है। जैसे कि परिवार, नातेदारी, संस्थाएं, समितियां समूह आदि। इस प्रकार अनेक उप संरचनाएँ मिलकर सामाजिक संरचना का स्वरूप तय करती है।

(3) सामाजिक संरचना से हमें समाज के बाहरी स्वरूप का ज्ञान होता है। संरचना की इकाइयां परस्पर संबंधित होकर एक ढांचे का निर्माण करती है जिससे हमें संरचना के स्वरूप का बोध होता है।

(4) जैसा कि सामाजिक संरचना के अर्थ में ऊपर कहा गया है कि सामाजिक संरचना इकाइयों की क्रमबद्धता होती है। संरचना इकाइयों का सहज संयोग नहीं बल्कि एक विशेष क्रम संरचना का स्वरूप निर्धारित करता है। इस क्रम के अभाव में संरचना कायम नहीं रह सकती।

(5) सामाजिक संरचना में विभिन्न इकाइयों का पद और स्थान पूर्व निर्धारित होता है। इन्हें प्रतिस्थापित नहीं किया जाता। समाज की जितनी भी इकाइयां है वे अपना-अपना पूर्व निर्धारित कार्य करती है।

(6) प्रत्येक समाज की संस्कृति भिन्न-भिन्न होती है, अतः संस्कृति द्वारा निर्धारित प्रतिमानों से भिन्नता होने के कारण संरचना भिन्न-भिन्न होती है। सामाजिक संरचना की प्रकृति उसके अंगो पर निर्भर करती है और अंगो का स्वरूप हर समाज में अलग होता है। इसलिए सामाजिक संरचना में विभिन्नता पाई जाती है।

(7) सामाजिक संरचना की एक विशेषता यह है कि यह अपेक्षाकृत स्थाई होती है।

(8) सामाजिक संरचना से सामाजिक प्रक्रियाओं में संबंधित व्यक्तियों या कर्ताओं की अन्तः-क्रियाएं सम्मिलित रहती हैं।

Amita Kumari